श्री गुरु तेगबहादुर जी का 400 वां प्रकाश पर्व

- मणि कुमार

शीश दिया पर सिर न दिया' यह कथन गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान और शौर्य की गाथा है। गुरुद्वारा शीशगंज साहिब, दिल्ली से उद्भुत यह कथन गुरु तेगबहादुर जी के कार्यों को याद दिलाता है। यह वाक्य गुरु तेगबहादुर जी के पुत्र गुरु गोबिंद जी का है। गुरु तेगबहादुर जी, जिन्होंने अपने राष्ट्र, अपनी संस्कृति, अपने लोग, अपने धर्म की रक्षा के लिए सिर कटाना स्वीकार किया, पर सिर झुकाना नहीं। औरंगजेब ने उनके सामने तीन विकल्प रखे

"तीन बात निरने कर लीजै, लखहु भली सो धारन कीजै। भरहा चलहु कलमे कहु पढि मुख, देहि शाहु भोगहु सभि बिध सुख। जे हठ करहु न मानहु एहो, करामात कामल होई देहो। जिम हजरत तुम से करिबावै, तिम करतेहु देख हरखावै।

जो इह दोनहु नाहिन मानहु.

अपने पान प्रान कहु हानहु।"

गुरु तेगबहादुर जी ने अपना शीश देना स्वीकार किया लेकिन शेष को स्वीकार नहीं किया।

सिख पन्थ के नौवें गुरु, गुरु तेगबहादुर जी का भारतीय संत परंपरा में अतुलनीय स्थान है। उन्होंने सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए अनेक यात्राएं की और जनता के मध्य इस धर्म के प्रति आदर भाव पैदा किया। देश में भ्रमण कर उन्होंने जनता में व्याप्त अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का सराहनीय कार्य किया। उन्होंने जनता को इस हेतु प्रेरित किया कि वह अन्याय का एकजुट होकर मुकाबला करें तथा धर्म और राष्ट्र की अस्मिता की खातिर अपने प्राणों की भी आहुति देने से न डरे। कश्मीर के हिंदू पंडितों की रक्षा के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी, लेकिन उन्होंने उनके धर्म की रक्षा की और अपने बलिदान के द्वारा उनमें विश्वास जगाया। गुरु तेगबहादुर, छठें गुरु हरगोबिंद के पांचवें और सबसे छोटे पुत्र थे। 'गुरु विलास' में ऐसा उल्लिखित है कि इनके पिता गुरु हरगोबिंद जी ने इनके जन्म को परमपिता का वरदान माना और कहा कि उन्हें इस बालक में अपने दादा गुरु अर्जनदेव जी की समर्पण भावना झलकती है। उन्होंने अकाल पुरुष और गुरु नानक की अनंत आत्मा का आह्वान किया कि वे बालक को ऐसा वीरोचित तेज प्रदान करें कि वह निर्भीकता व साहस से दुष्टता का वमन कर सत्य और धर्म की स्थापना के लिए अंतिम सांस तक युद्ध करने में समर्थ हो।"

गुरु तेगबहादुर एकांतनिष्ठ और त्यागी संत थे। अपने पिता गुरु हरगोबिंद की मृत्यु के पश्चात् बकाला आकर वर्षों तक साधना की। राजपाट (गुरु गद्दी) के बारे में इन्होंने कभी कोई भाव प्रकट नहीं किया। बल्कि आठवें गुरु ने जब उन्हें गद्दी सौंपी तो वे उसके लिए तैयार नहीं थे, लोगों ने उन्हें मनाकर इसके लिए तैयार किया। गुरु तेगबहादुर जी ने धर्म और राष्ट्र को एकजुट करने के लिए कई यात्राएं की। उनकी

यात्रा में कई पड़ाव आए पंजाब, दिल्ली, प्रयागराज, काशी, बिहार, असम, आदि जगहों पर खूब समय बिताया। ऐसा उल्लेख मिलता है कि गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्म के समय वे असम में थे। इन यात्राओं के दौरान कई महत्वपूर्ण कार्य किए। कई गुरुद्वारों का निर्माण व जीर्णोद्धार करवाया, भटिंडा का दमदम साहिब और पटना का हरिमंदिर साहिब का इसमें विशेष महत्व है। श्री दशम ग्रंथ में गुरु गोबिंद अपने पिता के पुनीत कार्यों का स्मरण किया है

"मुर पित पूरब कियसि पयाना, भाति भाति के तीरथि नाना। जब ही जात त्रिवेणी भए, पुनं दान दिन करत बितए।"

इस प्रकार गुरु तेगबहादुर ने अपना अधिकतर समय विभिन्न स्थानों की यात्रा में बिताया और अपने जीवन की अंतिम सांस तक धर्म और राष्ट्र का अपमान स्वीकार नहीं किया। गुरु तेगबहादुर जी के गोलोक प्रस्थान पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने लिखा है-

"तेगबहादुर के चलते भयो जगत में सोक।

है है है सभ जग भयो जै जै जै सुरलोक।"

गुरु तेगबहादुर जी ईश्वर की अराधना को ही मानव का सबसे बड़ा कार्य मानते हैं। "श्री गुरु तेगबहादुर जी निर्गुणोपासक साधकों की परंपरा का अनुसरण करते हुए ईश्वर की निर्गुण सत्ता को स्वीकार करते हैं. इस कारण रघुकुल तिलक राम तथा यशोदानन्दन कृष्ण को पूर्ण सच्चिदानन्द ब्रह्म स्वीकार करते हैं। श्री गुरु तेगबहादुर जी ने राम-कृष्ण के अलौकिक गुणों का सुंदर वर्णन किया है। वे मानते हैं कि बिना हरि सुमिरन के इस जगत से मुक्ति नहीं है और इस संसार में हरि से प्यारा कुछ भी नहीं है। गुरु तेगबहादुर जी कहते

"जो प्रानी निसि दिन भजे रूप राम तिह जानु.

हरिजन हरि अंतरु नहीं नानक साचि मानु। (29) रामु नामु उरि में गहियो जाके सम नहीं कोई।

जिस सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारे होई। (57)

वे ईश्वर के एकत्व के सिद्धांत को मानते हैं। परमात्मा केवल एक है। गुरु तेगबहादुर जी अकाल पुरख प्रभु राम जी का वंदन करते हुए कहते हैं-

"सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहि न कोई।

काहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ।

जठ सुख कठ चाहै सदा सरनि राम की लेह।

कहु नानक सुन रे मना दुरलभ मानुख देह।"

गुरु तेगबहादुर जी एक सांसारिक आध्यात्मिक आस्थाभाव रखने वाले महान संत थे। उन्होंने अपने त्याग और तप से सिख धर्म के इतिहास में उल्लेखनीय स्थान बनाया। गुरु तेगबहादुर जी की स्मृति को सदैव जीवंत रखने की आवश्यकता है। डॉ. कृष्ण गोपाल जी का यह कथन बिल्कुल प्रासंगिक है कि, " श्री गुरु तेगबहादुर जी ने भीषण कष्ट सहन करते हुए अपना बलिदान दिया। गुरु परंपरा के अत्यंत तेजस्वी दीपस्तंभ की तरह वे सदैव आलोकित रहेंगे। जिस प्रकार उनका यह बलिदान हुआ वह कथा केवल मार्मिक नहीं है वरन् भारतीय जनमानस को संगठित कर, आतताई शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करने हेतु सदैव सन्नद्ध करती रहने वाली बलिदानी गाथा भी है।

संदर्भ :

1. सिख पन्थ, सरदार बलवंत सिंह स्याल, पृष्ठ-159

2. गुरु तेगबहादुर-महिंदर पाल कोहली (सं.), पृष्ठ-9-10

3. श्री दशम ग्रंथ, विचित्र नाटक, पृष्ठ 201

4. श्री दशम ग्रंथ, विचित्र नाटक, पृष्ठ 182

5. भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता- डॉ. कृष्ण गोपाल, पृष्ठ 221

6 सलोकु महला 9

7. सलोकु, महला 9

8. भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता डॉ. कृष्ण गोपाल, पृष्ठ 228